International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 6, Issue 01, January 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भरतपुर राज्य की पृश्ठभूमि में जाट–राजपूत सम्बन्धों का अवलोकन

श्रीमती सुदीपमाला, असि0 प्रोफेसर

इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय गौंण्डा, इगलास, अलीगढ़

भरतपुर के जाट राज्य की स्थापना की पृष्ठभूमि में जाट राजपूत सम्बन्धों को देखना एक रोचक विषय है और इसके प्रका"ा में ही इस राज्य की स्थापना को ठीक – ठीक समझा जा सकता है। इन दांनों शक्तियों के तनावपूर्ण एवं संघर्षपूर्ण सम्बन्धों में ही भरतपुर राज्य की नींव पड़ीं। 1669 ई0 में मुगल शासक औरंगजेब का शासन था और जयपुर के कछवाह शासक मुगल शासक के बहुत बड़े समर्थक थे और मुगलों की ओर से युद्ध भी लडा करते थे, जबकि जाट प्रमुख या जाट जमींदार मुगल शासक औरंगजेब के विरोधी थे, अतः मुगल शासक औरंगजेब ने इस जाट शक्ति को पराजित करने के लिए जयपुर के कछवाह (राजपूत) शासक व प्रमुखों को नियुक्त किया। कालान्तर में जयपुर के राजपूत शासकों एवं जाट शक्ति के आपसी युद्धों एवं सघर्ष के दौर में ही जाट राज्य के रूप में भरतपुर राज्य की भूमिका तैयार हुई, जिसे विभिन्न संघर्षों एवं सम्बन्धों के प्रका"ा में निम्न चरणों में व्यक्त किया जा सकता है–

- जाट राजपूत संघर्ष का प्रारम्भ : बि"ानसिंह।
- बि"ानसिंह का सोंख व सिनसिनी अभियान।
- सोगर तथा अवार की गढ़ी पर आक्रमण।
- कसौट – पिंगौटा अभियान।
- सरसोदा, सोरखा तथा चिकसाना का संघर्ष।
- नंदराम जाट का जयघोष व हरिसिंह का पतन।

मथुरा के जाटों का गोकुल के नेतृत्व में हुए 1669 ई0 के विद्रोह के परिणाम कालजयी सिद्व हुये। जाटों ने इस पराजय से अपने युद्व कौ"ाल से अधिक, रणनीतियों पर कार्य करना आरम्भ किया प्रत्यक्ष युद्व में 20. 000 जाटों ने मुगलों से पराजय प्राप्त की थी।[1] अतः जाटों ने युद्ध रणनीतियों को पलटवार प्रत्यक्ष न कर परोक्ष पद्धति पर क्रियान्वित करना प्रारम्भ किया।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अब जाटों ने संगठित हो संयुक्त नेतृत्व के महत्व को समझते हुए अपने अपमान का प्रति"ोध लेने कर पृष्ठभूमि तैयार की। भरतपुर, पटियाला,नाभा व जींद सियासतों का सुदृढ़ीकरण कालान्तर में जाट विद्रोह का प्रतिफल था।[2]

ब्रजराज के नेतृत्व में कालान्तर में जाटों ने मुगलो के विरूद्व दुना विद्राह करते हुए मालगुजारी देना बन्द कर दिया गया। ब्रजराज के प"चात सर्वाधिक महत्वपूर्ण जाट नेतृत्व राजाराम का दिखाई देता है। यह भज्जा सिहं के पुत्र जो कि एक योद्धा थे।

उस समय सोगर का गढ़ दुर्दान्त उत्तरी भारत में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। सोगरिया जाटों को अधिकार में इस गढ़ के सरदार का वर्णन करना भी राजाराम के इतिहास का एक नितान्त आव"यक अध्याय है **रामचेहरा** नामक सोगरियाओं के सरदार का आस–पास के क्षेत्र में अत्यधिक प्रभुत्व था।

राजाराम ने उसकी सहायता से अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया व सिनसिनवार और सोगरिया गठबन्धन ने आगरा,मालवा,मथुरा, ग्वालियर आदि शाही माने जाने वाले मार्गों पर हमले किये।

1 चन्द्र सती"ा : मध्यकालीन भारत, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली 2015 प्र0 334

2 महाजन विद्याधर : मध्यकानीन भारत, एस चन्द एण्ड क0 लि0 नई दिल्ली 1994 पृ0 – 211

मेवात से चम्बल और कोटा तक का मार्ग इनके भय से बन्द हो गया। [3]सुबेदारो में इन विद्रोहियों से आतंकित होकर हाहाकार मच गया।

जाट राजपूत सम्बंधो की वैमनस्यता के पा"र्व में प्रबलतम कारणों का यदि अध्ययन किया जाए तो हम पाते है कि यह एक ही प्रकार के अपरिमित साहस और योग्यता सम्पन्न दो अलग विचारधाराओं का संघर्ष है जहाँ एक तत्कालीन इस्लामिक राज्य के सम्मुख नतमस्तक हैं। [4] वही दूसरी अपक्षाकृत शक्तिसम्पन्नता में तुलनात्मक स्वरूप में नेपथ्य में दिखती है किन्तु इस्लामिक शासन के सम्मुख घुटने नहीं टेकती सूक्ष्म से वृहद स्वरूप धारण करने वाले इन जाटों के कर अदायत्री, मालगुजारी तथा आर्थिक विदोहों से त्रस्त मुगल सम्राट अपने पूर्वजों की हिन्दुओं को हिंन्दुओं को लड़वाने की नीति को दुहराता हुआ दिखता है।

जयपुर के कछवाह परम्परा में बि"ानसिंह का आगमन औरगंजेब के लिये जाटों को नियन्त्रित करने का सर्वाधिक उपयुक्त समय व साधन माना जाता जाना तर्कसंगत जाना पड़ता है।

जाट – राजपूत (कछवाह) संघर्श का प्रारम्भ : बिषनसिंह

जाट – राजपूत (कछवाह) सम्बंधों का प्रत्यक्ष एवं स्पष्टतम् प्रारम्भ राजाराम के काल में प्रारम्भ होता है यह वह समय था जब भारतीय इतिहास अद्वितीय संक्रमण काल की प्रतीक्षा में व्यग्र हो उठा था।अग्निकुंडिय उत्पत्ति से गौरवान्वित चौहानों को भी इस काल में वीरवर राजाराम को शेखावतों के विरूद्ध युद्व में आंमत्रित करना पड़ा था।

सिनसिनी के जाट शाखा से यदुसिह की चतुर्थ पीढ़ी में खानचन्द्र हुये जिनके चार पुत्र थे – जैनखा, झुझा, ब्रजराज और भज्जा (इन्हें भगवंत नाम से भी जाना जाता है)

(3) ठाकुर गंगा सिंह : भरतपुर का इतिहास भाग 1, सिन्ध प्रका"ान भरतपुर, 1990 पृ0 77

(4) अहमद डा0 लईक मुगल कालीन भारत प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद 2016 पृ0 79

राजाराम इन्हीं भगवन्त या भज्जासिंह का योग्यतम पुत्र व कुल व जाट इतिहास को गति प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ।

राजाराम सिंह की मृत्यु के बाद बि"ान सिह ने अपने वकील (के"ाोराय) द्वारा बाद"ााह से मथुरा की फौजदारी माँगी और जाटों को उखाड़ फेंकने को सुनि"चत किया साथ ही यह वचन भी दिया कि वे जाटों के गढ़ सिनसिनी को भी अधिकृत कर लेंगे। इसी के उपक्रम में औरंगजेब ने बि"ानसिंह को राजा की उपाधि और खिलयत, 2000 का मनसब प्रदान किया और जाटों के नरसंहार का आदे"ा दिया।[5] इसमें सबसे महत्वपूर्ण था बि"ानसिंह को सिनसिनी व अन्य जाट महलों व गढ़ियों की जमींदारी मिलना। बि"ानसिंह स्वयं को मुगलों का वफादार साबित करने हेतु व्यग्र हो उठा था। साथ ही जाटों द्वारा कछवाहों के कुछ भू – भाग पर अधिकार कर लिये जाने के कारण जाटों को समूल नष्ट करना बि"ानसिंह की कटिबद्धता हो गयी थी।

सोमर तथा अवार की गढ़ी पर आक्रमण – मुगल दरबार में जाट उन्मूलन अभियान में उत्थान पतन देखते हुए बि"ान सिंह व सेनापति हरि सिंह ने और दृढ़ता पूर्वक जाटों के विरूद्ध अपने अभियान को आगे बढ़ाया। 1 जनवरी 1691 ई0 में हरि सिंह ने जाटों की एक घढ़ी अवार पर कूच की, इस बीच मई 21, 1691 ई0 में सोगर नामक गढ़ी पर अचानक कछवाह आक्रमण ने जाटों को हतप्रभ कर दिया। यह जंगल के बीच स्थित था राजपूतों ने जंगल साफ किये तथा शेष में आग लगा दी।[6] जाट निर्भय होकर इस विषम परिस्थति में भी अडिग रहे। एक दिन छल से जब रसद आपूर्ति हेतु सोगर के द्वार खुले तो कुछ राजपूत मजदूरों के भेष में भीतर प्रवे"ा कर गए तथा दस सैन्य दल उनकी रक्षा हेतु बाहर रहे। कछवाहों ने कत्लेआम मचाया 500 बागी पकड़ गये तथा अनन्तः इस गढ़ी को जीतकर बाद"ााह को प्रसन्न करने हेतु स्वर्ण कुंजी उसकी शान में पे"ा की गयी।

सोगर के प"चात कछवाहों ने अवार पर आक्रमण किया, दस महीने की घेरा– बन्दी के बाद अन्यन्त विषम समय से होकर अन्ततः 1692, फरवरी में कछवाहों की सेना ने अवार पर भी विजय प्राप्त कर ली।

(5)जयपुर संग्रह एस0एन0एल0 नकल, vii प्रष्ठ 276,314

सोगर और अवार की विजय के बाद भी जाट विद्रोहियों की गतिविधियों में कोई परिवर्तन की किरण फूटती नहीं दिखाई दी। इस बीच हिंड़ौन बयाना के विद्रोहियों को दंडित करने का प्रयास फौजदार कमालुददीन खाँ ने किया जिसके फलस्वरूप शंह"ाह ने उसका मंसब 500 जात बढ़ा दिया।

कसौट – पिंगोरा अभियान – राजपूतों (कछवाह) का अब नि"ाना कसौट था जो सोगर से 7 मील उत्तर में स्थित था। पिंगोरा भी दूसरा चिन्हित स्थान था जोकि भरतपुर से 14 मील दक्षिण प"िचम में स्थित था।

कसौट पर अधिकार करने में कछवाहों को अधिक श्रम न लगा तथा सितम्बर 1692 ई0 के लगभग यहाँ बि"ान सिंह का अधिकार हो गया, किन्तु फतेह सिंह के अधीन पिगोरा को अपने अधीन करने में उन्हें अव"य अति"ाय कष्ट हुआ। क्योंकि इसकी सामरिक स्थिति इस पिंगोरा दुर्ग को नष्ट करने की अनुमति नहीं देती थी। अतः कछवाहों ने फतेह सिंह को भगाकर (जो सोंख गूजर चला गया) पिंगोरा को अपना केन्द्र बना लिया।

बि"ान सिंह ने दिसम्बर 1692 ई0 में भटावली की ओर कूच की तथा भटावली से 10 मील उत्तर – प"िचम में सोंख गूजर नामक स्थान पर जाट कछवाह युद्ध हुआ जिसमें जाटों का नेतृत्व फतेह सिंह और चूड़ामन ने किया। जाट सरदारों के रूपवास व बयाना पलायन कर जाने के बाद कछवाहों ने 9 जनवरी 1693 ई0 में उस पर अधिकार कर लिया।

राजपूत यहीं नहीं रूके उन्होंने आगे बढ़ते हुए निम्नलिखित विजय प्राप्त कीं –

- जाटों से भटावली को, फरवरी में।
- रायसीस की जाटों से, फरवरी में।
- नरूकाओं से बरोरा, 19 अप्रैल में।
- चौहानों से गढ़ी केसरा, जून में।
- आगामी 6 महोनों में कछवाहों ने झरोटी, बराह, सैदपुर खैरोरा, महुआ, माटन, माधुन आदि छोटी – छोटी गढ़ियों पर आधिपत्य कर लिया।

उपरोक्त सफलता प्राप्त करने के प"चात भी राजपूतों की नाक में नकेल डालने के लिए जाट सदैव तत्पर दिखते रहे।

(6) शर्मा यू एन : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 148 से 152

अब जाटों ने अपना नया अड्डा मौजिया घाट का किला चैकोरा में बनाया। यह स्थान सीकरी से 8 मील दक्षिण में था। कछवाहों ने इस गढ़ी को घेरना चाहा, किन्तु जाट सरदार यहाँ से भाग निकले तथा पार्वती नदी के पार रतनपुर और इंताई में शरण ली।

सरसोदा, खोरसा तथा चिकसाना का संघर्श –

चैकोरा से 7 मील दक्षिण – पश्चिम में स्थित सरसोदा नामक स्थान पर जाट – कछवाह संघर्ष 1694 में मार्च माह में हुआ। जिसमें कछवाह सेना नायक हरि सिंह ने युद्ध में जाटों को पराजित कर जाट सरदार आलिया के पुत्र नन्दराम व अन्य 500 जाटों को बन्दी बना लिया साथ ही जाटों को भयभीत करने हेतु विद्रोहियों की सार्वजनिक रूप से निर्मम हत्या कर दी गयी। राजपूतों की कार्यवाहियों के परिणामस्वरूप जाट नेता बछामडी, उँदेरा और चिकसाना की गढ़ियों में छिप गये। हरि सिंह वहाँ भी पहुँच गया और चिकसाना में भीषण युद्ध हुआ इस युद्ध की विशेषता यह थी कि इसमें जाट स्त्रियों न भी असीमित साहस का परिचय दिया था तथापि राजपूत निःसन्देह जाटों की तुलना में अधिक शक्ति सम्पन्न होने के कारण विजयी रहे।

चिकसाना के भीषण युद्ध के बाद आगरा – भरतपुर मार्ग पर भी पकड़े गये जाटों का राजपूतों के द्वारा वध कर दिया गया किन्तु दुर्भाग्य यह था कि बिशन सिंह अद्यतन प्रमुख जाट सरदारों को पकड़ नहीं सका था। इनमें प्रमुख थे –

- सिनसिनी के चूड़ामन
- सोगर के लोढ़ा और बुकना
- सोंख के जगमन और बनारसी
- चैकोरा के मौजिया

यह अधिकाशी सरदार मथुरा से चार मील दक्षिण – पश्चिम में स्थित रतनपुर के जादों दुर्ग में डेरा डाले हुए थे। अतः कछवाहों ने स्थानीय फौजदार राज कल्याण सिंह भदौरिया से वार्ता कर जाटों पर नियंत्रित स्थापित करने के लिए रणनीति बनायी। मई 1694 ई0 में पुनः जाट – राजपूत युद्ध रिछुआ में हुआ जिसमें दो हजार से अधिक जाटों ने वीरतापूवक युद्ध किया किन्तु कछवाह पुनः विजयी हुए और एक बार पुनः बागी सरदार कछवाह सेनानायक को चकमा देकर पुनः भाग निकलने में सफल हुए व चंबल के द्वार पहुँच गये।

नंदराम जाट का जयघोश व हरि सिंह का पतन – जाट सरदार नंदराम अत्यन्त साहसी व हार न मानने वाले नेताओं में से था। इसने महावन, जलेसर, सादाबाद क्षेत्रों में पुनः उपद्रव प्रारम्भ कर दिए।[7] जाटों को पुनः शक्ति सम्पन्न करने हेतु इसने निम्नलिखित नवीन प्रयासों को क्रियान्वित किया –

- मुरसान (हाथरस) से 2 मील उत्तर – पूर्व में स्थित जवार में एक मजबूत किला बना लिया।
- इस किले की रक्षा हेतु इसे छोटी – छोटी गढ़ियों के जाल से ढ़क दिया गया। इन गढ़ियों से किहरारी और जगसाना की गढ़ियाँ उल्लेखनीय हैं जो महावन के आस – पास के क्षेत्र में स्थित थीं
- जलेसर के समीप स्थित नोह में बसने वाले नोहवार जाटों से सम्बन्ध मधुर करके नंदा ने इन परगनों में लूट मचा दी।

जाट–राजपूत सम्बन्धों का प्रथम चरण मुख्यतः राजाराम के विद्रोहों का प्रतिफल था, किन्तु राजाराम की असीमित इच्छा शक्ति ने कछवाहों की हिम्मत को खोखला करने का कार्य किया। राजाराम की मृत्यु कछवाहों के लिए सुनहरा अवसर था। मुगल दरबार में अपने पूर्वजों की भाँति प्रतिष्ठित होने के लिए उद्यत कछवाह नरे"। बि"ान सिंह के सामने यह वह अवसर था जो उसे औरंगजेब का करीबी बना सकता था। स्वप्रगति में अत्यन्त महत्वाकांक्षी बि"ान सिंह जाटों के उन्मूलन के प्रण के साथ निरन्तर आमेर से बाहर व्यस्त रहा निःसन्देह प्रकट रूप में कछवाह एक के बाद एक जाटों का उन्मूलन करते गये परन्तु इस अभियान ने उनकी आन्तरिक व्यवस्था को अत्यधिक प्रभावित किया।

सोंख, सिनसिनी, सोगर अवार ,कसौट, पिंगोरा चिकसाना आदि संघर्ष में यधपि कछवाहों को विजय श्री प्राप्त हुई तथापि जाटों का पूर्ण रूपेण उन्मूलन राजपूत नहीं कर सके।

कालान्तर में चूड़ामन का उदय व जाट रियासत भरतपुर की स्थापना इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि बि"ान सिंह की कार्यवाहियाँ व जाट – राजपूत सम्बन्धों का प्रथम – चरण परोक्ष रूप से जाटों के उपद्रव को शान्त करने में सफल न हो सका कालान्तर में कछवाहों के इस कृत्य ने एक वृहद जाट – आन्दोलन को जन्म दिया व सूरजमल जैसा योद्धा भारतीय इतिहास पटल पर आविर्भूत हुआ।

(7) कानूनगो कालिका रंजन : भारतीय इतिहास कॉग्रेस की कार्यवाही, भाग XI पृ0 176

जाट–राजपूत सम्बन्धों के प्रथम चरण के समापन के प्रतिफल को निम्नांकित बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता है –

- जाटों से निरन्तर युद्ध ने बि"ान सिंह के मनोबल को गिरा दिया इस ओमप्रान्त में ही उसने अपने प्रमुख योद्धा हरि सिंह को खो दिया जो निःसंदेह जाटों के लिए गौरव की बात थी।

- दक्षिण में मराठों की भाँति उत्तर में जाटों ने मुगल–साम्राज्य को लोहे के चने चबाने के लिए मजबूर कर दिया था। हजारों जाट विद्रोहियों का वध। जयपुर से हाथरस व मेवात से चंबल तक के बीच की लगभग 52 गढ़ों पर कछवाहों ने कब्जा कर लिया, तथापि जाटों के उत्साह को बि"ान सिंह व मुगल साम्राज्य दबा न सका।
- लगभग सात वर्षों के इस संघर्ष ने जाट कछवाह सम्बन्धों को घोर वैमनस्य में परिणत कर दिया। बि"ान सिंह के इस युद्ध का यदि सकारात्मक पक्ष देखा जाय तो विजित प्रदे"ा पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के अतिरिक्त इसके नकारात्मक पक्ष को ही अधिक मान्य प्रश्रय मिलता है।
- विजय आर्थिक कुप्रभाव को उत्पन्न करने वाली भी सिद्ध हुई। युद्धों ने उपजाऊ भूमि को नष्ट कर संसाधनों को प्रभावित किया ।
- राजपूतों की क्षति की बात की जाए तो यह इस चरण के साथ न्याय न होगा मुगल साम्राज्य को भी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी थी। एतिहासिक साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कतिपय महाल ऐसे थे जो किसी भी प्रकार का कर मुगल साम्राज्य को अर्पित नहीं करते थे।

इस प्रकार जाट – राजपूत सम्बन्धों की प्रथम संध्या का सूर्यास्त चूड़ामन द्वारा जाट राज्य भरतपुर की स्थापना के उषाकाल को जन्म देता है

देवताओं के प्रिय को कलिंग की जीत पर प"चाताप है देवताओं का प्रिय देखकर अत्यन्त दुखी हुआ कि नये प्रेक्ष की विजय करने में कितने लोगों की मृत्यु और कैद होती है।

अ"ोक : अभिलेख XIII

GROVER BL AND MEHTA ALKA A HEW LOOK AT MODERN INDIAN HISTORY , S CHAND AND CO. PVT. LTD.RAMHAGEER P168

- भरतपुर राज्य की स्थापना का श्रेय बदन सिंह को दिया जाता है, किन्तु उसकी प्रष्ठ भूमि चूड़ामन द्वारा ही तैयार की गयी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) कानूनगो कालिका रंजन : जाटों का इतिहास, ओरिजनल्स पब्लिके"ान, नई दिल्ली, 2003

(2) ठाकुर दे"ाराज : जाट –इतिहास, सूरजमल स्मारक ि"ाक्षा संस्था, नई दिल्ली, 2002

(3) टॉड कर्नल जेम्स : एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, जोधपुर ग्रन्थागार, 1914

(4) महाजन विद्याधर : मध्यकालीन भारत, नई दिल्ली, 1994

(5) चन्द्र सती"ा : मध्य कालीन भारत, नई दिल्ली, 2015

(6) भटनागर डा0 बी0 एस0 : सवाई जयसिंह, जयपुर 1972

भाोध संस्थान

(7) ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन (यू0पी0)

(8) महाराजा सूरजमल अनुसंधान एवं प्रका"ान केन्द्र, दिल्ली

(9) श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ (म0प्र0)